<u>प्रेस विज्ञप्ति</u> दिनाँक : 11-02-2006

शबरीधाम भविष्य में संपूर्ण देश का तीर्थ क्षेत्र बनेगा
– नरेन्द्र मोदी

बहुचर्चित प्रथम वनवासी शबरीकुंभ का उद्घाटन आज दोपहर विविध महात्माओं की उपस्थिति में और पूजनीय सत्यमित्रानंदजी गिरि, पू. आशारामजी बापु, महामहिम मोरारीबापु एवम् गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी की उपस्थिति में हुआ।

उद्घाटन सत्र का आरंभ वनवासी बन्धुओं द्वारा इष्ट देवताओं के आह्वान से हुआ। इस अवसर पर डांग के पांचो राजा मंच पर उपस्थित थे। विविध प्रकार के वनवासी नृत्य-गीत एवम् कला प्रदर्शन, उद्घाटन सत्र के आकर्षण रहे।

प्रास्ताविक में वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम उराँव जी ने शबरीकुंभ की पूर्व पीठिका बताई। तीन साल पूर्व इस कुंभ का निश्चय स्वामी असीमानंदजी ने किया था और इसकी घोषणा पू. मोरारी बापू ने की थी। वह आज साकार हो रहा है यह बताते हुये उराँव जी ने कहा, ''वनवासी बन्धु हिन्दू समाज का अभिन्न अंग हैं। इस कुंभ का यह संदेश होगा।''

अपने प्रमुख भाषण में स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि ने कहा कि किसी का धर्म छीनना यह बड़ा अपराध है। किसी के बहकावे में या प्रलोभन में आके अपना धर्म छोड़ देना ठीक बात नहीं है। कुछ लोग छद्म प्रचार द्वारा हमें ही आक्रमक कह रहे हैं। ऐसे लोगों को यह कुंभ सद्बुद्धि देगा। धर्म जागरण के साथ हर गाँव में पाठशाला, व्यायामशाला होने की आवश्यकता है। आज भी वनवासी बन्धु बहुत थोड़े में अपना गुजारा करता है। यह भी एक सीखनेवाली बात है। समाज को अपने आप स्वयंप्रहरी होना आवश्यक है। वनवासी बलवान हो, शक्तिशाली हो और उसका धर्म कोई छीन न ले, यह स्थिति आवश्यक है। कुंभ इसमें बड़ा सहयोग देगा। शबरीकुंभ का संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचाना हम सबका दायित्व है।

इसके बाद गुजरात के मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जैसे ही भाषण के लिये खड़े हुये तालियों की बौछार हुई। अपने भाषण में नरेन्द्रभाई ने कहा, ''बुद्धिजीवी संतों के शब्दों पर विश्वास नहीं करता लेकिन शबरीकुंभ का यह दृश्य संतों के शब्दों का परिचय देता है। उनके मंत्र से तंत्र जुड़ गया और शबरीकुंभ साकार हुआ। मुख्यमंत्री के नाते मैं सबसे अधिक आनंद महसूस कर रहा हूँ क्योंकि यह गुजरात का पर्यटन वर्ष है और इसका आरंभ शबरी कुंभ से हुआ है। यह शबरीधाम पूरे देश के लिये आगे जाकर तीर्थ क्षेत्र बनेगा और प्रत्येक वनबंधु को शबरीधाम आने की इच्छा होगी। इसके कारण डाँग जिले का सर्वांगीण विकास प्रारंभ होगा। विश्व के सामने वनवासी कला, पराक्रम, धर्म के प्रति लगाव प्रगट होगा। यह एक धार्मिक समारोह तो है ही, साथ ही वनवासी विकास का एक नया मोड़ है। वंचित, उपेक्षित ऐसे समाज की भावनाओं का आदर करके यह कुंभ हो रहा है। यह कुंभ उज्वल भारत का दर्शन कराता है। इसके बाद श्री नरेन्द्रभाई ने अपनी विशिष्ट शैली में कुंभ के विरोधियों पर तीखे वार किये। अर्जुनसिंह और कोंग्रेस पार्टी, विदेशी धन पर इस देश की संस्कृति को अपमानित करनेवाले व्यक्ति और संस्थायें इनके द्वारा कुंभ के विरोध में योजनापूर्वक जो गलत

प्रचार हुआ, उसका अधिक लाभ कुंभ को हुआ। शायद शबरीकुंभ समिति इतना प्रचार नहीं कर पाती उतना प्रचार इन लोगों ने किया। भारत के संविधान में धर्मपरिवर्तन कराना अपराध है यह बात कही गई है लेकिन यह बात मैं कहता हूँ तो हमें कटघरे में खड़ा कर देते हैं। संविधान का सम्मान करना राज्य सरकार का दायित्व है और हम इसे अच्छी तरह से निभा रहे हैं। महात्मा गांधी ने भी धर्म परिवर्तन का विरोध किया है।'' और यह कहके नरेन्द्र भाई ने कहा कि विरोधियों का दर्द अलग है। कुंभ के कारण वनबन्धु राम से जुड़ जायेंगे और राम उनका प्राण हैं। लेकिन लॉर्ड मेकॉले के पुत्र यह गौरवशाली इतिहास समझना नहीं चाहते। शबरी कुंभ समिति ने नगरवासियों को वनवासियों से जोड़ा है। शबरी कुंभ समिति अभिनंदन की पात्र है। कुछ लोग अपना ही धर्म सबसे ऊपर, सबसे श्रेष्ठ मानते हैं लेकिन हिन्दू धर्म ही केवल एक मात्र धर्म है जो सबका आदर करता है। इसलिये वह सर्वश्रेष्ठ धर्म है। इस कुंभ द्वारा राम राज्य की ओर हम चल पड़े हैं।

पू. मोरारी बापू ने अपने भाषण में कहा तीन साल पूर्व की घोषणा किसी व्यक्ति या संस्था की नहीं रही, पूरे व्यास पीठ से हुई और यह विशाल कुंभ साकार हुआ। वनवासी बन्धुओं की लाचारी, गरीबी और निरक्षरता का दुरुपयोग कर धर्म परिवर्तन हुये। लेकिन अब शबरी के बेरों ने सबको इकठ्ठा किया है। शबरी कुंभ एक **''आनंद''** है। वचनात्मक जब रचनात्मक में परिवर्तित होता है तब उसका प्रभाव ज्यादा होता है, उसके परिणाम अच्छे निकलते हैं, शबरीकुंभ उसका ही एकरूप है।

झांझरका गुजरात के शंभुनाथजी महाराज ने कहा, ''धर्म, आस्था और श्रद्धा छीनना सबसे बड़ा पाप है।'' बाद में हुये आशारामजी बापू के भाषण को काफी उत्फुल्ल प्रोत्साहन मिला। लगभग **1** घंटे के उस भाषण में आशाराम जी बापू ने हिन्दू धर्म की गौरवशाली परंपरा, इतिहास का स्मरण कराया। उन्होंने ईसाईयों की धर्म परिवर्तन प्रवृत्ति की तीखी आलोचना की और कुंभ का विशेषरूप से स्वागत किया।

उद्घाटन सत्र के समय लगभग सवा लाख से ज्यादा वनवासी बन्धु उपस्थित थे। मंच पर माता शबरी और प्रभु राम मिलाप का प्रसंग दर्शाया गया था।

कृष्णपालसिंह भदौरिया

संपादक

विश्व संवाद केन्द्र – गुजरात

Phone No. : (079) 26579301, Fax. No. : (079) 26579220

E-mail : vskguj@icenet.co.in, info@vskgujarat.com

Website : www.vskgujarat.com